

බුද්ධි ජරණය සම්බන්ධයෙන් ඉස්ලාමයේ ස්ථාවරය කුමක්ද? (බුද්ධි ජරණය යනු තර්කය විනි කළ සංස්කෘතික විශාසාරයයි. එය සාමාන්යයෙන් හඳුන්වන්නේ බුද්ධත්වයේ යුගය, ෫෭෫෭෭෭ වැනි යුගය ලෙසයි. එය සාහිත්යය වෙතස් කිරීම පමණක් නොව, කලාව, විද්ශාව, දර්ශනය සහ දේශපාලනය ද ආවරණය කළ විශාසාරයක් වූ අතර ජරණ විචල්වය වැනි සමාජ විශාසාර දිරිමත් කළේය.)

ज्ञानोदय की इस्लामी अवधारणा विश्वास और विज्ञान की टोस नींव पर आधारित है, जो विवेक के ज्ञान और हृदय के ज्ञान को पहले अल्लाह पर ईमान के साथ और फिर विज्ञान के साथ जोड़ती है, जो ईमान से अलग नहीं हो सकता।

यूरोपीय ज्ञानोदय की अवधारणा को अन्य पश्चिमी अवधारणाओं की तरह इस्लामी समाजों में स्थानांतरित कर दिया गया है। इस्लामी अवधारणा में ज्ञानोदय केवल ऐसे दिमाग पर निर्भर नहीं होता है, जिसे ईमान का प्रकाश प्राप्त न हो। उसी तरह किसी व्यक्ति को अपने ईमान का लाभ नहीं होता है, यदि वह बुद्धि की नेमत को, सोच, चिंतन, विचार और मामलों को इस तरह से प्रबंधित करने में उपयोग नहीं करता है, जिससे सार्वजनिक हित प्राप्त हो, जो लोगों को लाभान्वित करता हो और धरती पर बाकी रहता हो।

मध्य काल के अंधकार में मुसलमानों ने सभ्यता के प्रकाश को बहाल किया, जो पश्चिम और पूरब के सभी देशों, यहाँ तक कि कांस्टेंटिनोपल में भी बुझ चुका था।

यूरोप में ज्ञानोदय आंदोलन चर्च के अधिकारियों द्वारा तर्क और मानवीय इच्छा के खिलाफ किए गए अत्याचार की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया था। जबकि यह स्थिति इस्लामी सभ्यता में कभी पैदा नहीं हुई।

"अल्लाह उनका सहायक है जो ईमान लाए। वह उनको अंधेरो से निकालता है और प्रकाश में लाता है, और जो काफ़िर (विश्वासहीन) हैं, उनके सहायक तागूत (उनके मिथ्या पूज्य) हैं, जो उन्हें प्रकाश से अंधेरो की ओर ले जाते हैं। यही लोग जहन्नम जाने वाले हैं, और वे उसमें सदैव रहेंगे।" [98]

इसलिए कि इंसान जिसे अल्लाह अज्ञानता, बहुदेववाद और अंधविश्वास के अंधेरो से ईमान, ज्ञान, जानकारी एवं सत्य के प्रकाश की ओर निकालता है, वह बुद्धि, अंतर्दृष्टि और एहसास का प्रकाशित व्यक्ति है।

[सूरा अल-बकरा : 257] कुरआन की इन आयतों में सोच-विचार करने से हम पाते हैं कि इंसान को

